

UPSC-CSE 2027/28

DAILY CURRENT AFFAIRS

 **ONE STOP SOLUTION**

By **Faiyaz Sir**



**13
OCTOBER**



**COMPLETE
COVERAGE**



**EXAM
FOCUSED**



**ANALYSIS
MADE EASY**



**STATIC + CURRENT
INTEGRATION**



**STAY AHEAD
STAY PREPARED**



“
नींद नीलामी में बिकती है
जब **सपने** बड़े होते हैं,
मंज़िलें उन्हीं को झुककर सलाम करती हैं
जो **मेहनत** पर अड़े होते हैं।
”

By - Dr. Faiyaz Sir



Big
Dreams
Require
Big Efforts
— 😊

आज क्या पढ़ेंगे?

- **PM-Gati Shakti**
- **Light House**
- **महत्वपूर्ण तथ्य**



पत्र सूचना कार्यालय

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार



हमारे बारे में



प्रेस विज्ञप्ति



गैलरी



अनुसंधान इकाई



मीडिया सुविधाएं



आर्काइव



तथ्यों की जांच



होम / सभी विश्लेषक / **Explainer Details**



Infrastructure

पीएम गतिशक्ति के पाँच वर्ष:भारत की बुनियादी ढांचा योजना में परिवर्तनकारी बदलाव



- **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (पीएमजीएस-एनएमपी)** एक राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा मानचित्रण प्लेटफॉर्म से धीरे-धीरे विकसित होकर एक व्यापक नियोजन ढाँचे के रूप में उभरा है। यह जीआईएस आधारित मंच के माध्यम से विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और बुनियादी ढांचा नेटवर्कों को एक साथ जोड़ता है, ताकि एकीकृत योजनाएं बनाने और परियोजनाओं के समन्वय में सहायता मिल सके। **वर्तमान में इसके दायरे में 58 केन्द्रीय मंत्रालय और विभाग तथा सभी 36 राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश शामिल हैं।**

विकसित भारत के इंजन के रूप में बुनियादी ढांचा

- भारत बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहा है, जिसके लिए विभिन्न क्षेत्रों और परिवहन के साधनों के बीच समन्वय आवश्यक है। सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, हवाई अड्डे, जलमार्ग और उपयोगिता सेवाओं के नेटवर्क अक्सर एक क्षेत्र में एक-दूसरे से जुड़ते हैं। इन नेटवर्कों की एक साथ योजना बनाने से लागत और समय की बचत करने, परियोजनाओं के बीच समन्वय स्थापित करने तथा मौजूदा बुनियादी ढांचे का अधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करने में मदद मिल सकती है। इसी आवश्यकता के चलते विभिन्न बुनियादी ढांचा नेटवर्कों को एक साझा नियोजन ढाँचे में एकीकृत करने की पहल की गई।
- इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए **13 अक्टूबर 2021 को पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान की शुरुआत** की गई। इसके तहत विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के आँकड़ों को एक साझा भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) आधारित प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराया गया। पीएम गतिशक्ति योजनाकारों को बुनियादी ढांचा, भौगोलिक विशेषताओं, आर्थिक क्षेत्रों और अन्य संबंधित महत्वपूर्ण आँकड़ों को एक साथ देखने में मदद करता है, जिससे बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए आँकड़ों पर आधारित योजना बनाने और निर्णय लेने में सहायता मिलती है। पाँच वर्षों में यह दृष्टिकोण एक राष्ट्रव्यापी नियोजन ढाँचे के रूप में विकसित हो चुका है।

पीएम गतिशक्ति: एक दृष्टि में

- पीएम गतिशक्ति के मार्गदर्शन के लिए छह सिद्धांत निर्धारित किए गए हैं, जिनका उद्देश्य बुनियादी ढांचा नियोजन को अधिक एकीकृत, कुशल और समन्वित बनाना है। इनमें एकीकृत विकास, मल्टीमॉडल बुनियादी ढांचा, अंतिम छोर तक संपर्क की सुविधा, भूमि अधिग्रहण में तेजी, मंजूरीयों की संख्या में कमी तथा पारिस्थितिक प्रभाव को कम करना शामिल है।

पीएम गतिशक्ति की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं

- सात बुनियादी ढांचा इंजन:** सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, जलमार्ग, हवाई अड्डे, सार्वजनिक परिवहन और लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचा इस योजना के प्रमुख क्षेत्र हैं।
- समग्र सरकारी नियोजन:** राष्ट्रीय मास्टर प्लान में 58 केन्द्रीय मंत्रालयों और विभागों तथा सभी 36 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को शामिल किया गया है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में अवसंरचना संबंधी प्रस्तावों की योजना बनाने और उनका आकलन करने में मदद मिलती है।
- एकीकृत डिजिटल नियोजन:** राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत बुनियादी ढांचा और भू-स्थानिक जानकारी को एक साझा जीआईएस आधारित मंच पर एकत्रित किया गया है, जिससे स्थानिक नियोजन और निर्णय लेने की प्रक्रिया को सहायता मिलती है।
- डेटा तक व्यापक पहुँच:** पीएम गतिशक्ति पब्लिक प्लेटफॉर्म 230 अनुमोदित डेटासेट तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे स्थल की उपयुक्तता का विश्लेषण, संपर्क सुविधा का मानचित्रण, मार्ग निर्धारण की योजना और अनुपालन संबंधी जाँच करने में मदद मिलती है।
- डेटा लेयर्स:** 12 अक्टूबर 2026 तक 23,493 से अधिक डेटा लेयर्स के माध्यम से बुनियादी ढांचा और अन्य प्रासंगिक जानकारी को साझा जीआईएस आधारित प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराया गया है।



आईटीएलए: एकीकृत परिवहन नियोजन को मजबूत बनाना

- पीएम गतिशक्ति के पूरक के रूप में, केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में एकीकृत परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स प्राधिकरण (आईटीएलए) की स्थापना को मंजूरी दी है। यह प्राधिकरण दीर्घकालिक परिवहन नियोजन और समन्वय पर ध्यान केन्द्रित करेगा।
- आईटीएलए दस वर्ष या उससे अधिक की नियोजन अवधि को ध्यान में रखते हुए **राष्ट्रीय परिवहन मास्टर प्लान** तैयार करेगा। यह क्षेत्रीय और वार्षिक परिवहन योजनाओं का आकलन करेगा तथा 500 करोड़ रुपये या उससे अधिक लागत वाली परियोजनाओं का तकनीकी मूल्यांकन करेगा। प्राधिकरण इन परियोजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी भी करेगा। इसके अतिरिक्त, यह फास्टैग, वाहन और जीएसटीएन ई-वे बिल जैसे स्रोतों से प्राप्त जानकारी को एकीकृत करके राष्ट्रीय परिवहन डेटा रिपॉजिटरी (एनटीडीआर) विकसित करेगा।

पीएम गतिशक्ति : काम जारी

- पुणे-बेंगलुरु एक्सप्रेसवे:** 699 किलोमीटर लंबा एक्सप्रेसवे महाराष्ट्र और कर्नाटक के औद्योगिक एवं आर्थिक क्लस्टरों को जोड़ेगा जिसके 2027-28 तक पूरा होने की उम्मीद है। इनमें मोटर वाहन और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के कारखाने, फार्मास्यूटिकल क्लस्टर, विशेष आर्थिक क्षेत्र तथा रक्षा गलियारे शामिल हैं। यह परियोजना **15 राष्ट्रीय राजमार्गों, 25 राज्य राजमार्गों और 6 रेलवे स्टेशनों** को जोड़ती है, जिससे मल्टीमॉडल संपर्क सुविधा को बढ़ावा मिलेगा। पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (एनएमपी) प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हुए, वन भूमि के ओवरलैप को **19 प्रतिशत** तक कम करने के लिए मार्गरेखा में संशोधन किया गया। इस परियोजना से यात्रा के समय में **7-8 घंटे** की कमी आने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, इससे **प्रतिवर्ष लगभग 16 करोड़ लीटर ईंधन की बचत** होगी और कार्बन उत्सर्जन में लगभग **39 करोड़ किलोग्राम की कमी** आएगी।

- जोगीघोपा मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क, असम:** असम में जोगीघोपा मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। इसे पूर्वोत्तर क्षेत्र में सड़क, रेल और अंतर्देशीय जलमार्गों के माध्यम से माल की निर्बाध आवाजाही को सक्षम बनाने के लिए विकसित किया जा रहा है। इसके एकीकृत नियोजन और मांग के विश्लेषण के लिए पीएम गतिशक्ति का उपयोग किया गया। ब्रह्मपुत्र नदी पर **धुबरी और फूलबाड़ी** के बीच एक चार-लेन पुल का निर्माण कार्य जारी है। इस पुल के बनने से यात्रा की दूरी **205 किलोमीटर से घटकर 20 किलोमीटर** रह जाने और यात्रा का समय लगभग **सात घंटे से घटकर 30 मिनट** होने की योजना है।
- हरित ऊर्जा गलियारा: लद्दाख-हरियाणा:** पीएम गतिशक्ति के अंतर्गत नेटवर्क नियोजन समूह (एनपीजी) द्वारा अनुशंसित यह परियोजना **5 गीगावाट की पारेषण प्रणाली के माध्यम से 13 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा की निकासी और ग्रिड एकीकरण** को सक्षम बनाएगी। इसमें **लद्दाख के पांग और हरियाणा के कैथल के बीच उच्च वोल्टेज वाली 480 किलोमीटर लंबी एचवीडीसी पारेषण लाइन** शामिल है। इसके दोनों सिरों पर **5 गीगावाट क्षमता वाले एचवीडीसी टर्मिनल** स्थापित किए जाएंगे। यह पारेषण प्रणाली हिमाचल प्रदेश और पंजाब से होकर गुजरेगी तथा कैथल में राष्ट्रीय ग्रिड से जुड़ेगी। इस परियोजना को **वित्त वर्ष 2029-30 तक पूरा** करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

प्रश्न: पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (PMGS-NMP) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) आधारित प्लेटफॉर्म पर विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के डेटा को एक साथ लाता है।
2. इसकी शुरुआत 13 अक्टूबर 2021 को एकीकृत बुनियादी ढांचा नियोजन (Integrated Infrastructure Planning) के उद्देश्य से की गई थी।
3. इसमें केवल केंद्रीय मंत्रालय शामिल हैं, राज्यों को इसमें सहयोग की अनुमति नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
- (B) केवल 2 और 3
- (C) केवल 1 और 3
- (D) 1, 2 और 3 सभी

मुख्य परीक्षा प्रश्न (Mains Question)

- **प्रश्न:**
- "पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (PMGS-NMP) भारत के बुनियादी ढांचे (Infrastructure) के विकास में कितना परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ है? मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी और अंतर-मंत्रालयी समन्वय (Inter-Ministerial Coordination) को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका की चर्चा कीजिए।" (15 अंक, 250 शब्द)



पत्र सूचना कार्यालय

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार



हमारे बारे में



प्रेस विज्ञप्ति



गैलरी



अनुसंधान इकाई



मीडिया सुविधाएं



आर्काइव



तथ्यों की जांच



होम / सभी विशेषताएं / विशेषताएं विवरण



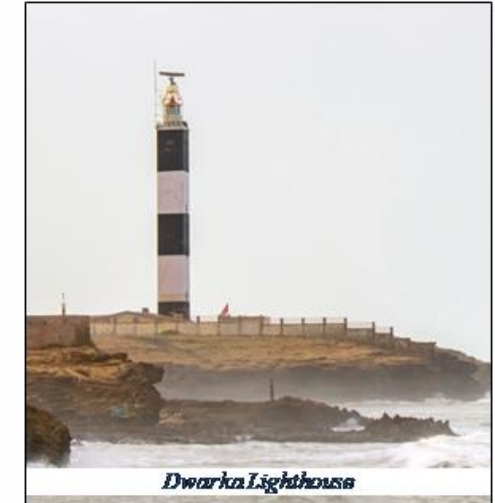
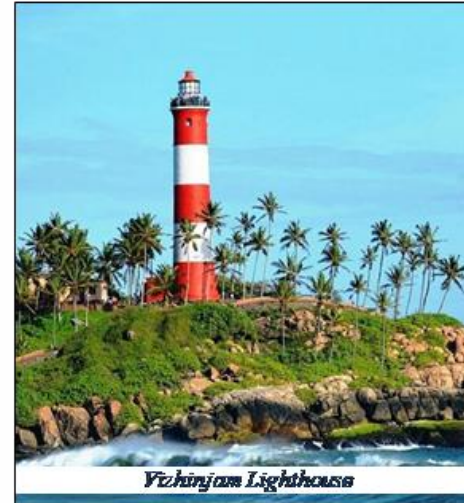
Infrastructure

बीकन से लैंडमार्क तक:



भारत के बदलते लाइटहाउस की कहानी

- पीढ़ियों से, भारत के लाइटहाउस ऐसी जगहें रही हैं, जिन्हें लोग दूर से ही देखते थे। समुद्र के किनारे खड़े ये लाइटहाउस तटीय इलाकों के खतरनाक हिस्सों की पहचान कराते थे और अंधेरे में जहाजों को रास्ता दिखाते थे। इनकी रोशनी नाविकों के काम आती थी और इनके टावर आस-पास के नजारों का अहम हिस्सा थे।
- 11,000 किलोमीटर से ज्यादा लंबी तटरेखा और **205 लाइटहाउस** के साथ, भारत अब समुद्र के इन ऐतिहासिक रखवालों को नए नजरिए से देख रहा है। आज, लाइटहाउस सिर्फ दूर से दिखने वाली एक पहचान से कहीं ज्यादा बन रहे हैं। इनका मुख्य मकसद वही है: भारत की तटरेखा के साथ जहाजों को सुरक्षित रास्ता दिखाना। हालाँकि, इस अहम भूमिका के साथ-साथ अब एक नया अध्याय भी शुरू हो रहा है। लाइटहाउस स्टेशनों को और उन्नत बनाया जा रहा है और आम लोगों के लिए खोला जा रहा है। समुद्र से जुड़ी इनकी कहानियों को संग्रहालयों में जगह मिल रही है, जबकि इनके आस-पास के इलाकों में रास्ते, बगीचे, एम्फीथिएटर और दूसरी सुविधाएँ विकसित की जा रही हैं। आधुनिक व्यवस्था उस अवसंरचना को मजबूत बना रही है, जो इनकी लाइट को भरोसेमंद तरीके से चालू रखती है।
- लाइटहाउस पर्यटन में आने वाले पर्यटकों की संख्या **2014 में लगभग 4 लाख से बढ़कर 2024-25 में 18.63 लाख** हो गई है। देश भर में **75 लाइटहाउस** को उनके ऐतिहासिक और वास्तु के लिहाज से महत्व को बनाए रखने के लिए पर्यटन गंतव्यों के तौर पर विकसित किया गया है। इनमें गुजरात में मांडवी और द्वारका लाइटहाउस, कर्नाटक में तादरी लाइटहाउस, तमिलनाडु में पंबन लाइटहाउस और केरल में विझिनजम लाइटहाउस शामिल हैं। डायरेक्टरेट जनरल ऑफ लाइटहाउस एंड लाइटशिप्स (डीजीएलएल) के तहत एक डिजिटल टिकटिंग पोर्टल भी शुरू किया गया है, जिससे पर्यटकों को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुविधा मिल रही है। लाइटहाउस पर्यटन में बढ़ती दिलचस्पी भारत की समुद्री विरासत को दिखाने के नए अवसर पैदा कर रही है। इन बदलावों से आस-पास के होटलों, रेस्तरां, टूर ऑपरेटर्स, ट्रांसपोर्ट सेवाओं, स्थानीय दुकानों और कारीगरों के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा हुए हैं।



रोशनी जो अब भी रास्ता दिखाती है

- दूर से देखने पर लाइटहाउस भले ही एक जैसे लगते हों, लेकिन उनकी जानी-पहचानी रोशनी के पीछे की तकनीक में काफी बदलाव आया है। जो रोशनी कभी आग और तेल पर निर्भर थी, वह अब सौर ऊर्जा से चलती है और आधुनिक तकनीक से और बेहतर हो गई है। देश के सभी लाइटहाउस सौर ऊर्जा चालित हैं, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा उस अवसंरचना का हिस्सा बन गई है, जो इन नेविगेशनल लाइटों को चालू रखती है।
- अलग-अलग स्टेशनों के ज़रिए इस विकास को समझा जा सकता है। गुजरात के सामियानी द्वीप पर, तेल के दीपक की जगह सौर ऊर्जा से चलने वाले इलेक्ट्रॉनिक फ्लैशर ने ले ली और फिर 2016 में एलईडी लालटेन लगाई गई। जोड़िया में, सोलर से चलने वाली फ्लैशिंग लाइट लगाई गई थी, जिसे 2021 में ज्यादा तेज़ रोशनी वाली एलईडी लालटेन में अपग्रेड किया गया। लाइटहाउस अब भारत के बड़े समुद्री सूचना नेटवर्क का हिस्सा बन गए हैं। समुद्र तट पर मौजूद लाइटहाउस पर **87 ऑटोमैटिक आइडेंटिफिकेशन सिस्टम (एआईएस)** शोर स्टेशन लगाए गए हैं, जिससे सुनिश्चित होता है कि लाइट की बीम भरोसेमंद और तुरंत काम करने वाली बनी रहे और जहाजों को सुरक्षित रास्ता दिखाने के लिए तैयार रहे। एआईएस, सोलास (समुद्र में जीवन की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन) के नियमों के अनुसार जहाज और तट पर आधारित डेटा ब्रॉडकास्ट सिस्टम है। यह हालात की जानकारी बेहतर बनाने का एक मज़बूत ज़रिया है, जिससे नेविगेशन की सुरक्षा और शिपिंग पर्यटन प्रबंधन की क्षमता में सुधार होता है।

लाइटहाउस संग्रहालय: समुद्री इतिहास हुआ और करीब

जहाँ तकनीक लाइटहाउस के काम करने के तरीके को बेहतर बना रही है, वहीं इसकी पुरानी कहानियों को भी अपनी जगह मिल रही है। भारत में चेन्नई, महाबलीपुरम, अलाप्पुझा, कन्नूर, मुट्टोम, द्वारका और गोपनाथ में **लाइटहाउस संग्रहालय** बनाए गए हैं।



भारत में लाइटहाउस (प्रकाशस्तंभ) अवसंरचना और तटीय पर्यटन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के पास 11,000 किलोमीटर से अधिक लंबी तटरेखा और 200 से अधिक लाइटहाउस हैं।
2. लाइटहाउस पर्यटन विकास (Lighthouse Tourism Development) पहल का उद्देश्य केवल जहाजों के नौवहन (Navigation) सुरक्षा को बढ़ाना है, न कि पर्यटन सुविधाओं का विकास करना।
3. भारत में लाइटहाउसों के रख-रखाव और आधुनिकीकरण के माध्यम से इन्हें संग्रहालयों, एम्फीथिएटर और उद्यानों जैसे पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जा रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains Practice Questions)

- "पारंपरिक नौवहन बीकन से आधुनिक पर्यटन लैंडमार्क के रूप में भारत के लाइटहाउसों का रूपांतरण केवल तटीय अवसंरचना का विकास नहीं है, बल्कि यह नीली अर्थव्यवस्था (Blue Economy) को गति देने का एक प्रयास है।" समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
(150 शब्द / 10 अंक)

महत्वपूर्ण तथ्य



YouTube Homework

**पत्र सूचना कार्यालय**
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

[होम](#) / [All Factsheet](#) / [Factsheet Details](#)

Industries

सुधारों की कड़ी

प्रविष्टि तिथि: 17 SEP 2025 15:45 PM

वस्त्र, परिधान एवं लॉजिस्टिक में जीएसटी सुधार

महत्वपूर्ण तथ्य



परिचय

- माल और सेवा कर (जीएसटी) का हाल में किया गया सुसंगतिकरण एक महत्वपूर्ण सुधार है, जिसका उद्देश्य ढाँचागत विसंगतियों को दूर करना, लागत को कम करना और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मांग को बढ़ावा देना है। ये बदलाव विशेष रूप से कपड़ा और लॉजिस्टिक्स उद्योगों में प्रभावशाली हैं, ये दोनों ही घरेलू विकास, रोजगार और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- वैल्यू चेन में कर दरों को एक समान करके जीएसटी सुधार उपभोक्ताओं के लिए सामान को किफायती बनाता है, श्रम-गहन क्षेत्रों में रोजगार को बनाए रखता है और भारत की वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता को बढ़ाता है। कपड़ा क्षेत्र में, यह सुसंगतिकरण फाइबर से लेकर परिधान तक की पूरी वैल्यू चेन को मजबूत करता है। यह विसंगतियों को कम करके, परिधान को और अधिक किफायती बनाकर, खुदरा मांग को पुनर्जीवित करके और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता का समर्थन करके यह संभव होता है।
- इन सुधारों से दूरगामी लाभ मिलने की उम्मीद है, जिससे लंबे समय से चली आ रही विसंगतियाँ दूर होंगी और साथ ही "मेक इन इंडिया" पहल के लिए एक मजबूत नींव बनेगी, जिससे देश एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित होगा।

भारतीय वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार की पहल

- भारत सरकार भारतीय वस्त्रों को बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रही है। उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने सितंबर 2021 में ₹10,683 करोड़ के परिव्यय के साथ वस्त्रों के लिए उत्पादन-लिंकड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना को मंजूरी दी है। इस योजना का लक्ष्य एमएमएफ कपड़े, एमएमएफ परिधान और तकनीकी वस्त्र हैं, ताकि बड़े पैमाने पर विनिर्माण और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा मिल सके। सरकार राज्य एवं केंद्रीय करों व लेवी में छूट (आरओएससीटीएल) और निर्यात योग्य उत्पादों पर ड्यूटी एवं करों में छूट (आरओडीटीईपी) जैसी योजनाओं के जरिए निर्यात को बढ़ावा दे रही है। ये योजनाएं निर्यात (विशेषकर परिधान, वस्त्र, अन्य तैयार वस्तुएं) पर लगने वाले राज्य व केंद्रीय करों एवं शुल्क की छूट या वापसी प्रदान करती हैं। सरकार पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क के जरिए बुनियादी ढाँचे में सहयोग करती है और नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन और समर्थ योजना के माध्यम से नवाचार व कौशल उन्नयन को बढ़ावा देती है।

महत्वपूर्ण तथ्य



1. दुनिया में वस्त्र उद्योग में सबसे आगे कौन है?

- वैश्विक स्तर पर **चीन (China)** कपड़ा उत्पादन और निर्यात दोनों में नंबर-1 पायदान पर है। दुनिया के कुल टेक्सटाइल निर्यात का लगभग 30% से अधिक हिस्सा अकेले चीन का है।

2. दुनिया में भारत की रैंकिंग क्या है?

- **कुल टेक्सटाइल और परिधान (Textiles & Apparel Combined)** निर्यात में: भारत दुनिया में 5वें से 6वें स्थान पर आता है (चीन, बांग्लादेश, वियतनाम और तुर्की के बाद)।
- **कच्चे माल/कपास (Raw Cotton & Yarn)** उत्पादन में: भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

3. क्या हम बांग्लादेश से पीछे हैं?

- **तैयार कपड़ों (Ready-Made Garments/Apparel)** के निर्यात में भारत बांग्लादेश से पीछे है।
- **बांग्लादेश की स्थिति:** बांग्लादेश तैयार कपड़ों (RMG) का दुनिया का दूसरा/तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक है (वार्षिक निर्यात लगभग **\$38-\$40 बिलियन डॉलर**)।
- **भारत की स्थिति:** भारत का केवल तैयार कपड़ों (Garments) का निर्यात लगभग **\$16 बिलियन डॉलर** है।

कारण:

- बांग्लादेश को यूरोपीय संघ (EU) और अन्य देशों में 'कम विकसित देश' (LDC) का दर्जा होने के कारण **शून्य-शुल्क (Duty-Free Access)** का लाभ मिलता है।
- बांग्लादेश पूरी तरह से रेडीमेड गारमेंट्स के बड़े पैमाने के उत्पादन (Mass Fast-Fashion) पर केंद्रित है।
- हालाँकि, भारत का **घरेलू बाजार (Domestic Market)** लगभग \$225 बिलियन डॉलर का है, जिसके कारण भारत के कुल उत्पादन का बड़ा हिस्सा देश के भीतर ही खपत हो जाता है, जबकि बांग्लादेश पूरी तरह निर्यात-उन्मुख (Export-driven) है।

4. भारत का आयात-निर्यात (Import-Export) आँकड़ा

- वित्तीय वर्ष **2025-2026** के व्यापार आँकड़ों के अनुसार:
- **कुल टेक्सटाइल एवं एपेरल निर्यात (Exports):**
- भारत ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान लगभग **\$33.5 बिलियन से \$35.8 बिलियन (USD)** का कपड़ा और परिधान निर्यात किया है।
- (भारत सरकार ने 2030 तक **\$100 बिलियन** के टेक्सटाइल निर्यात का लक्ष्य रखा है)
- **कुल टेक्सटाइल आयात (Imports):**
- भारत सालाना लगभग **\$6 बिलियन से \$7.5 बिलियन (USD)** का टेक्सटाइल आयात करता है। इसमें मुख्य रूप से विशेष प्रकार के सिंथेटिक फाइबर (Polyester/Viscose), तकनीकी वस्त्र (Technical Textiles), और हाई-एंड फैब्रिक शामिल हैं।

INDIA bloc rally takes SIR protest to SC's door

Opposition alliance comes together amid heavy police deployment to march to Supreme Court

Cong. says on social media 2.5 lakh people took part in the four-hour-long 'March for Democracy'

Petition filed in the SC over alleged large-scale deletions in poll rolls, electoral irregularities

Sobhana K. Nair
NEW DELHI

A massive crowd on Monday walked down arterial roads in the national capital, tailing a procession of buses carrying leaders of the Indian National Developmental, Inclusive Alliance (INDIA) from Constitution Club to the Supreme Court, where Leader of the Opposition in the Lok Sabha Rahul Gandhi and other top leaders of the bloc filed a petition over the alleged large-scale voter deletions and irregularities in the special intensive revision (SIR) of electoral rolls.

The Congress, on its social media handles, said 2.5 lakh people participated in the protest. The "March for Democracy", which began at 1.30 p.m. at the Constitution Club, went on for more than four hours, mostly unhindered by police barricades and intervention, and also allowing for an occasional break for the protesters from waving flags and sloganeering at ice cream and juice carts.

The march had several such light moments, including when Congress president Mallikarjun Kharge donned a Batman mask. There was heavy deployment of police, who stood on the sidelines watching.

Stopped near SC

After winding through central Delhi and doubling back via Mandi House, the procession was finally stopped by the police near the Supreme Court. Several leaders, including Mr.



Major momentum: INDIA bloc supporters and activists during the march to the Supreme Court in New Delhi on Monday. SUSHIL KUMAR VERMA

Gandhi, Priyanka Gandhi Vadra, Tejashwi Yadav and Akhilesh Yadav, climbed atop a vehicle for the last leg of the march, which rang with slogans against the government and the Chief Election Commissioner, Gyanesh Kumar.

Several top Congress leaders, including Sachin Pilot, were seen marching along with the protesters.

Despite a proposal from INDIA bloc leaders that only the National Flag should be flown, Congress flags dominated the scene. Flags of Left student bodies, CPI (M)'s SFI, CPI's AISF and CPI(ML)'s AISA, could also be seen.

A majority of the protesters were Congress supporters who had travelled

from different parts of the country – from Salma Begum, who came from Koraput in Odisha on her maiden trip to Delhi, to Mayank Chaudhary, a former Youth Congress leader leading a cavalcade of SUVs from Badkal, Haryana, slipping by police barricades on the way.

The lead bus in the procession had a carefully selected mix of INDIA bloc leaders to present a united front, with Congress's K.C. Venugopal standing at the landing waving at the crowd, and the front row occupied by Mr. Kharge and Leader of the Opposition in the Lok Sabha Rahul Gandhi.

The bus also had Samajwadi Party's Dharmendra

Yadav, RJD's Tejashwi Yadav, Shiv Sena (UBT)'s Sanjay Raut, Trinamool's Saugata Ray, CPI(M) general secretary M.A. Baby, CPI (ML) general secretary Dipankar Bhattacharya, and CPI leader P. Sandosh Kumar. AISA president Neha Bora and former president Sai Balaji were also there. SFI leader Aishe Ghosh was also on the bus.

The protesters who walked alongside the buses waved at the leaders. Every time Mr. Gandhi stood up, a loud cheer ensued. Several ran with their cameras held aloft at the sight of Ms. Bora, a recognisable face of the student movement. Mr. Kharge had requested all parties to inform their parliamentarians to reach

the Constitution Club at 1 p.m. Despite the coordination difficulties, there was a wide assembly of leaders.

Former West Bengal Chief Minister Mamata Banerjee was among the leaders who gathered there. She did not join the procession, having to return to Kolkata. Samajwadi Party chief Akhilesh Yadav, who reached Delhi only after 2 p.m., joined the protest around 4 p.m., for the last stretch of the march.

Thirty-six-year-old Ms. Salma, who left her two children behind in Koraput to fly down to Delhi, said, "I have come to meet Rahul Gandhi." She had been waiting since morning to catch a glimpse of her leader.

Davinder Singh came from Jalandhar, Punjab, dressed as the mythical god of death, Yamraj, and explained his sartorial choice, saying: "I am here to remind the government, which is stealing our votes, that they too have to face their makers."

Amid all this rhetoric, Narayan Saha made a brisk sale of papads, ₹20 a pop. His basket emptied rapidly. He was not as bothered about the SIR as the crowd around him appeared to be. Instead, he was worried that his brother's name had been cut from the ration card back home in Sitamarhi, Bihar.

MORE REPORTS ON
» PAGES 4 & 5

YouTube Homework

Jantar Mantar no more designated protest venue

NEW DELHI

The Delhi Police on Monday denotified Jantar Mantar as a designated venue for protests and demonstrations, replacing one of the capital's longest-established sites of public dissent with three alternative grounds farther from the seat of power. The move drew criticism from activists, who said relocating demonstrations would make it harder for citizens to draw the attention to their demands. Under a standing order by Delhi Police Commissioner, Ramlila Maidan, around 4 km from Jantar Mantar, Burari Ground, around 15 km away, and CBD Ground, about 13 km away, have been designated as protest venues. » PAGE 4

Form 6 changes made after ruling on Bihar SIR: SC

NEW DELHI

The Supreme Court on Monday clarified that it had neither approved nor disapproved the controversial alterations made to Form 6 in its May 27 judgment, which was entirely about the legality of the pilot special intensive revision (SIR) process in Bihar. The court said the May 27 ruling pre-dated the changes made to Form 6. The changes and modified declarations, which required applicants to provide ancestry details or linkage to previous SIR rolls on the ECINet portal, were introduced subsequently in July. » PAGE 4

महत्वपूर्ण तथ्य



- **BNSS Section 163**
- **Contempt Of Court & Accountability**
- **Fundamental Rights vs Public Order**
- **Suspension of Internet & Essential Services – Anuradha Bhasin – 2020**
- **Article 19 (1)**
- **Article 19 (3)**
- **Article 20**
- **Article 21**
- **Article 22**
- **ECI**
- **CEC – EC's**
- **SIR**
- **RPA 1950 – 21(3)**
- **RPA 1950 – 28 (RER-1960 - 6,7,8)**
- **RPA 1951 - 29(A)**
- **Conduct of Election Rules 1961 – 4(A) – Form 26**

Retail inflation rises to two-year high of 5.5% as food, fuel become costlier

T.C.A. Sharad Raghavan
NEW DELHI

Retail inflation rose to a nearly two-year high of 5.5% in September, driven up by a continued acceleration in food and fuel inflation, official data released on Monday showed.

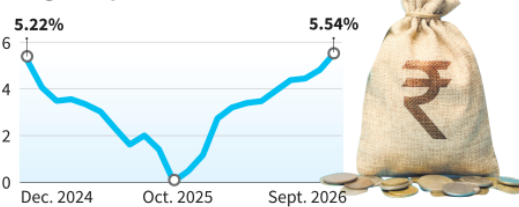
Inflation as measured by the Consumer Price Index (CPI) in September was the highest since October 2024. The rate in September also marked a substantial increase over the 4.8% rate seen the preceding month. The Reserve Bank of India (RBI)'s upper comfort limit for retail inflation is 6%.

According to economists, this acceleration of inflation shows the RBI's Monetary Policy Committee was correct in hiking rates in its most recent policy review last week.

"With the CPI inflation jumping to a slightly higher than forecast 5.5% in September 2026 and appearing set to cross 6% in the ongoing month, the MPC's recent rate hike appears

Prices climb

Retail inflation rose to a nearly two year high of 5.54% in September 2026, driven by higher food and fuel prices, after rising steadily since October 2025



Inflation as measured by the Consumer Price Index (CPI) in Sept. was the highest since October 2024

prescient," Aditi Nayar, chief economist at ICRA, said. "While the monsoon has turned out to be fairly dismal, with inadequate replenishment of reservoirs clouding the outlook for rabi sowing, another rate hike in December seems quite certain," she added.

Inflation in the food and beverages category

jumped to 7.4% in September 2026 from 5.7% in the previous month. The new series of the CPI does not provide category-wise historical data before January 2026. The data shows September's food inflation rate is the highest during the period for which there is data.

Inflation in the transport segment came in at 5% in September 2026, having risen for the last five consecutive months. Taken together, the food and transport prices pushed inflation in the "restaurant and accommodation services" segment to 9.4%,

capping off a seven-month streak of consecutive acceleration.

The third segment that saw elevated inflation was that of "personal care, social protection and miscellaneous goods & services", which saw inflation come in at 13.75% in September 2026, although this was the lowest it has been in the period for which there is data.

"Crude oil prices currently remain elevated, and their trajectory will keenly influence the likelihood and extent of further rate tightening in 2027," the ICRA chief economist said.

"In the case of personal care, where inflation was 13.8%, it is mainly due to silver and gold where prices are determined externally," Madan Sabnavis, chief economist at the Bank of Baroda, said. "Industries like durables, FMCG, automobile have announced an increase in prices and this should get reflected in the CPI over the next few months."

YouTube Homework

- WPI
- PPI
- IIP
- INDEX OF CORE INDUSTRIES
- ISP

New Keralam Bill to focus on dignity of senior citizens, protection of rights

The Hindu Bureau
THIRUVANANTHAPURAM

The Keralam Senior Citizens (Care and Protection) Bill, 2026, that will be tabled in the Assembly on Tuesday aims at promoting healthy and active ageing, registration and regulation of senior citizen care centres, and protection of rights, dignity, and social security of the elderly.

The Bill underscores the principles of right to dignity, ageing in place and home-based care, safety and social care ecosystem, and senior citizens' participation in policy making. Thrust is given to rights such as access care, safe public spaces, digital inclusion, legal aid, reporting of abuse, and access to dignity-preserving products.



Giving care: The Bill points out that the population of the elderly has been increasing in Keralam. GETTY IMAGES

The Bill points out that the population of the elderly has been increasing in Keralam. However, modernisation and globalisation had paved the way for nuclear families, adversely affecting the living conditions of the elderly. In order to accommodate

their needs, various systems need to be put in place and long-term forward planning is required.

It calls for urgent policy intervention to integrate and standardise home-based health-care services and create a legal framework for their operation.

It aims at ensuring that older persons are not marginalised or left unprotected, advocating for their financial security, health care, shelter, and protection of rights.

Protection unit

According to the Bill, the government will set up a State Senior Citizen Protection Unit, besides a District Senior Citizen Protection Forum in each district.

Training to caregivers, with phased certification compliance, is another aspect. It proposes that the government establish a 'Keralam Geriatric Care Certification Framework' providing progressive certification pathways for caregivers. A 'State Register of Caregivers' is also mooted in the Bill.

YouTube Homework

- Constitutional Provision for Senior Citizens

Lakshadweep turns 100% literate under govt.'s ULLAS scheme

The Hindu Bureau
KOCHI

Lakshadweep was declared a 100% literate Union Territory on Sunday. The declaration was made by Administrator Praful Patel, marking the achievement of full literacy status under the ULLAS-Nav Bharat Saaksharta Karyakram, according to a communication.

According to the Department of Education, an initial survey identified 1,113 adult non-literates across the islands. Intensive teaching and assessment drives were subsequently undertaken to equip the identified learners with foundational literacy and numeracy skills.

The department claimed that all eligible learners had successfully cleared the Foundational Literacy and Numeracy Assessment Test (FLNAT), enabling Lakshadweep to attain full literacy status under ULLAS, a Centrally sponsored scheme.

Doorstep assessments

Teachers and supervisors volunteered to conduct doorstep and home-based assessments for learners who were unable or hesitant to attend designated examination centres. Follow-up assessments and re-testing were also organised to ensure that eligible learners completed the evaluation process, according to the communication.

महत्वपूर्ण तथ्य



भारत में कितने राज्य और केंद्र शासित प्रदेश (UT) पूर्ण साक्षर हैं?

- अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय साक्षरता मानकों (जहां साक्षरता दर 95% से अधिक होती है, उसे पूर्ण साक्षर माना जाता है) तथा ULLAS पहल के तहत हाल ही में कुल 5 राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों को 'पूर्ण साक्षर' (Fully Literate) घोषित किया गया है:
- लद्दाख (Ladakh):** जून 2024 में भारत का पहला पूर्ण साक्षर केंद्र शासित प्रदेश (UT) बना।
- मिजोरम (Mizoram):** पूर्ण साक्षरता हासिल करने वाला राज्य।
- गोवा (Goa):** पूर्ण साक्षरता हासिल करने वाला राज्य।
- त्रिपुरा (Tripura):** पूर्ण साक्षरता (~95-96%) हासिल करने वाला राज्य।
- हिमाचल प्रदेश (Himachal Pradesh):** सितंबर 2025 में उल्लास मेले के दौरान 99.3% साक्षरता दर के साथ भारत का 5वां पूर्ण साक्षर राज्य/UT घोषित किया गया।

FLNAT क्या है?

- FLNAT का फुल फॉर्म **Foundational Literacy and Numeracy Assessment Test** है।
- कार्य:** यह ULLAS योजना के तहत आयोजित की जाने वाली एक राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा (मूल्यांकन टेस्ट) है।
- आयोजन:** यह परीक्षा साल में दो बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) और राज्य शिक्षा विभागों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जाती है।
- प्रमाणपत्र:** जो शिक्षार्थी इस परीक्षा को उत्तीर्ण करते हैं, उन्हें आधिकारिक रूप से साक्षर घोषित किया जाता है और NIOS एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा डिजिटल साक्षरता प्रमाण पत्र (Literacy Certificate) प्रदान किया जाता है।

उल्लास (ULLAS) क्या है?

- ULLAS का फुल फॉर्म **Understanding Lifelong Learning for All in Society** है। इसे आधिकारिक तौर पर **नव भारत साक्षरता कार्यक्रम (New India Literacy Programme - NILP)** के नाम से भी जाना जाता है।
- मंत्रालय:** यह शिक्षा मंत्रालय (Ministry of Education), भारत सरकार की एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
- उद्देश्य:** 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के ऐसे नागरिकों/वयस्कों को साक्षर बनाना और जीवन उपयोगी कौशल सिखाना जो किसी कारणवश औपचारिक स्कूली शिक्षा से वंचित रह गए थे।
- मुख्य घटक:** इसमें केवल मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (Reading, Writing, Numeracy) ही नहीं, बल्कि **डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, व्यावसायिक कौशल और जीवन कौशल (Critical Life Skills)** भी शामिल हैं।
- लागू करने का तरीका:** यह योजना मुख्यतः **स्वयंसेवा (Volunteerism)** पर आधारित है और इसके लिए **ULLAS App** का उपयोग किया जाता है।

Work out a plan for capping prices of all drugs: SC to govt.

Government proposes a 30% trade-margin cap on patented and non-patented cancer medicines, but the top court asks why the cap cannot be extended to all medicines and medical products

Aaratrika Bhaumik
NEW DELHI

Even as the Centre informed the Supreme Court on Monday that it had decided to cap trade margins at 30% for non-scheduled cancer drugs, the court questioned why the benefit of such a price regulation should be confined to cancer drugs and not extended to other essential medicines and medical products.

The development comes after a Bench of Justices Vikram Nath and Sandeep Mehta expressed concern over stark disparities between the price to retailer (PTR) and the maximum retail price (MRP) of certain medicines, particularly cancer drugs, with mark-ups in some instances soaring to 1,000%. The Bench had flagged that such exorbitant mark-ups constituted "broad daylight dacoity".

Solicitor-General Tushar Mehta, appearing for the Centre, informed the



Availability of price-controlled medicine is government's responsibility. GETTY IMAGES

Bench that the proposed 30% trade-margin cap would cover both patented and non-patented cancer medicines.

The Bench, however, said that while the intervention was commendable, it was inadequate, and questioned why other medicines and medical devices could not also be brought within the 16% retailer margin prescribed under the Drugs (Prices Control) Order (DPCO),

2013. "This is just the tip of the iceberg... What about other drugs," the Bench asked.

The top court was hearing petitions filed by advocate Kishan Chand Jain and paediatric surgeon Sanjay Kulshrestha seeking stricter enforcement of price controls under the DPCO to curb disproportionate margins across the pharmaceutical supply chain.

Justice Mehta drew attention to steep markups

on medical devices and consumables, pointing out that an India-made cardiac stent costing around ₹5,000 was being sold by hospitals for more than ₹25,000.

"We understand that there are transportation costs, raw material costs, R&D costs and other ancillary costs, but all these are included in the MRP. What is the logic behind allowing them to sell at 400 times the actual cost? How can you allow this? What is the benefit for the patients?" the Bench observed.

Additional Solicitor-General Aishwarya Bhati, also appearing for the Centre, cautioned against a uniform cap across medicines. The Bench, however, was not persuaded, observing that ensuring the availability of price-controlled medicines was the government's responsibility. The Bench gave the Centre until October 27 to work out the modalities for capping medicine prices, when the matter will be heard next.

- DPCO 2013
- PTR
- MRP

महत्वपूर्ण तथ्य



- शेड्यूलड मेडिसिन (Scheduled Medicine) और नॉन-शेड्यूलड मेडिसिन (Non-Scheduled Medicine) क्या होती हैं और इन्हें कौन घोषित करता है?

1. शेड्यूलड मेडिसिन (Scheduled Medicine) क्या होती हैं?

- शेड्यूलड मेडिसिन वे दवाइयां होती हैं जिन्हें सरकार द्वारा आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची (National List of Essential Medicines - NLEM) में शामिल किया गया है और जिनकी कीमतों पर सरकार का सीधा नियंत्रण (Price Control) होता है।
- **कीमत पर नियंत्रण (Price Control):** इन दवाइयों की अधिकतम खुदरा कीमत (MRP) एक तय सीमा (Ceiling Price) से अधिक नहीं हो सकती। फार्मास्युटिकल कंपनियां अपनी मर्जी से इनके दाम नहीं बढ़ा सकतीं।
- **उद्देश्य:** ये आम जनता के लिए सबसे जरूरी और जीवन-रक्षक दवाइयां होती हैं (जैसे- मधुमेह, ब्लड प्रेशर, कैंसर, एंटीबायोटिक्स और हृदय रोग की दवाइयां), ताकि देश के हर नागरिक को ये उचित और सस्ते दामों पर मिल सकें।
- **ड्रग शेड्यूलस (नियम):** ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स रूल्स के तहत इनके अलग-अलग शेड्यूल (जैसे- **Schedule H, H1, X**) होते हैं, जिन्हें डॉक्टर के पर्चे (Prescription) के बिना बेचना कानूनी अपराध है। इनकी पैकेजिंग पर लाल रंग की पट्टी (Red Strip) होती है।

2. नॉन-शेड्यूल्ड मेडिसिन (Non-Scheduled Medicine) क्या होती हैं?

- नॉन-शेड्यूल्ड मेडिसिन वे दवाइयां होती हैं जो NLEM (आवश्यक दवाओं की सूची) में शामिल नहीं होती हैं।
- कीमत का निर्धारण: इनकी MRP पर सरकार सीधे तौर पर कोई निश्चित मूल्य (Ceiling Price) तय नहीं करती है। निर्माण करने वाली कंपनियां इनकी कीमत खुद तय करती हैं।
- मूल्य वृद्धि का नियम: इसका मतलब यह नहीं है कि कंपनियां मनमाने दाम वसूल सकें। नियमों के अनुसार, कंपनियां एक साल में इन दवाइयों की कीमतों में 10% से अधिक की वृद्धि नहीं कर सकतीं।
- उद्देश्य: ये वे दवाइयां होती हैं जो आपातकालीन या अति-आवश्यक श्रेणी में नहीं आती हैं या जिनके कई विकल्प बाजार में पहले से उपलब्ध होते हैं।

3. इन्हें कौन घोषित और विनियमित (Regulate) करता है?

- इन दवाइयों की सूची तैयार करने और उनकी कीमतें नियंत्रित करने में मुख्य रूप से दो सरकारी संस्थाएं काम करती हैं:
- क. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (Ministry of Health & Family Welfare)
- कार्य: यह मंत्रालय NLEM (आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची) को तैयार और घोषित करता है।
- विशेषज्ञों की एक समिति यह तय करती है कि देश के नागरिकों के लिए कौन-कौन सी दवाइयां सबसे ज्यादा जरूरी (Essential) हैं और उन्हें इस सूची में जोड़ा जाता है।
- ख. एनपीपीए (National Pharmaceutical Pricing Authority - NPPA)
- कार्य: जब स्वास्थ्य मंत्रालय NLEM सूची जारी कर देता है, तब NPPA (जो रसायन और उर्वरक मंत्रालय के अंतर्गत आता है) DPCO (ड्रग्स प्राइसेस कंट्रोल ऑर्डर) के नियमों के तहत शेड्यूल्ड दवाइयों की अधिकतम कीमत (Ceiling Price) तय करता है।
- NPPA यह भी निगरानी रखता है कि नॉन-शेड्यूल्ड दवाइयों की कीमतें सालाना 10% से ज्यादा न बढ़ाई जाएं।



A polar bear is seen on ice floes in the British Channel in the Franz Josef Land archipelago. Photo taken in 2021. AFP

Climate body faces deadlock over timeline of new reports

Reuters

The decision was expected to take minutes. But after nearly three years of debate, members of the world's leading authority on climate change still can't agree on a timeline to publish its next review of the latest science on the warming planet.

Such assessments from the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) have informed every major United Nations climate agreement for three decades. But the impasse over publication dates could leave countries to decide the next phase of action without consensus on critical issues - including the extent to which some global warming might be reversible - according to interviews with more than a dozen current and former IPCC scientists, government negotiators and meeting observers.

On October 12, representatives from the IPCC's 195 member states are expected to have convened in Addis Ababa, Ethiopia's capital, for a plenary meeting many see as the last chance to agree publication dates falling before UN climate talks in November 2028. That's when governments are due to assess progress toward goals set out in the landmark agreement reached in Paris in 2015.

IPCC nations remain divided over the timeline for key climate reports, raising fears they may miss the 2028 UN climate summit and weaken science-based climate decisions

The possibility the IPCC's reports might not be ready in time for the 2028 talks has alarmed a coalition of countries pushing for more robust action. Those discussions are intended to guide decisions on climate financing and national targets to bring down greenhouse gas emissions.

Countries including India, Kenya, Saudi Arabia, Russia, and China are pressing for more time to prepare the IPCC's next reports to ensure scientists from less-resourced countries can make meaningful contributions. Some scientists struggle to publish new research in time to be included or to take time off from their regular jobs for unpaid IPCC work, they say.

The deadlock - unprecedented in the IPCC's history - comes as the organisation faces increasing pressure from governments critical of climate policies they say hurt industrial competitiveness or restrict the ability of emerging economies to use cheaper, more polluting fuels to meet development needs. The United States, the IPCC's biggest funder, quit the organisation in January.

The IPCC will publish three key reports: one on the extent and causes of climate change, another on vulnerabilities and how countries can adapt, and a third on options to avoid warming getting worse. Scientists chairing groups preparing the reports have proposed a work plan that would see all three approved by September 2028.

Robert Vautard, a French co-chair, said the proposal was based on the anticipated workload rather than the timing of the 2028 UN summit. Report timelines are typically approved in "a matter of minutes," he added.

Opponents of the chairs' proposal want the second and third reports pushed into 2029.

Thiagarajan Jayaraman, a scientist who represents India at the IPCC, said it was "short-sighted" to suggest the value of the body's work rests solely on contributing to the 2028 UN talks.

Developing countries have long argued their perspectives are not sufficiently reflected in IPCC reports because they do not have enough experts involved and because their researchers have fewer resources to publish peer-reviewed studies. The result, Thiagarajan said, is that issues of "equity and inclusivity" are in some instances "simply ducked."

- IPCC Summit – 65th
- Addis Ababa, Ethiopia

YouTube Homework

- IPCC का पूरा नाम **Intergovernmental Panel on Climate Change (अंतर-सरकारी जलवायु परिवर्तन पैनल)** है।
- यह संयुक्त राष्ट्र (UN) की एक वैज्ञानिक संस्था है, जिसकी स्थापना 1988 में **विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)** और **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)** द्वारा की गई थी।
- **मुख्य बातें (Short Points):**
- **कार्य:** यह दुनिया भर के वैज्ञानिकों के शोध और डेटा का अध्ययन करके जलवायु परिवर्तन, उसके प्रभावों और भविष्य के खतरों पर वैज्ञानिक रिपोर्ट तैयार करती है।
- **उद्देश्य:** सरकारों को जलवायु परिवर्तन से जुड़ी वैज्ञानिक जानकारी देना, ताकि वे ठोस नीतियां और समझौते (जैसे पेरिस समझौता) बना सकें।
- **पुरस्कार:** जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए इस संस्था को 2007 में **नोबेल शांति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया था।

Contextualising WWF's report on wildlife population decline

The Living Planet Index report shows that exactly 50% of populations were in decline, 43% were increasing, and the remaining 7% were stable

DATA POINT

Hannah Ritchie

There has been a 73% decline in wildlife populations since 1970, according to the 2026 Living Planet Index report. As with previous editions, it makes for a concerning read, despite this year's title being about the "Science of Hope".

While these trends are worrying, the numbers presented in the Living Planet Index (LPI) report, released by the Worldwide Wildlife Fund (WWF), are often misunderstood or misreported. The headline figure from the 2026 update of the LPI shows that studied wildlife populations declined by an average of 73% from 1970 through 2022, as shown in **Chart 1**. The data covers mammals, birds, reptiles, amphibians, and fish; it doesn't yet include invertebrates or plants.

To clarify what this doesn't mean – it doesn't tell us anything about the number of species lost; the number of populations or individuals that have been lost; the number or percentage of species or populations that are declining; or the number of extinctions.

The authors of the LPI go to great lengths to explain this. Yet, there is inevitably a long list of headlines claiming that we've "lost 73% of wildlife", "73% of species have gone extinct", or "73% of species are declining". All of these are incorrect. But then, what does this metric actually tell us?

Across the 35,803 wildlife populations studied, the average decline was 73%. This doesn't mean that 73% of populations are in decline; in fact, around half of the studied populations were in decline, while half were either increasing or stable.

To calculate the LPI, researchers collect data on the change in wildlife numbers across tens of thousands of populations. While the data is measured relative to

1970, very few populations have data stretching back this far. Many populations only have data for much shorter and sparser timelines. For every population, the change in numbers over time is calculated, giving a rate of change. It can be positive, negative, or zero. To obtain the final LPI number, researchers take the geometric mean of the rates of change across all these populations. They also provide different weights to different populations, which affects the final result.

The 2022 Living Planet Index reported an average decline of 69% since 1970. In 2024, it reported a 73% decline. And this latest report finds the same figure. From this, you might assume that wildlife populations dropped by four percentage points between the 2022 and 2024 editions, and nothing has changed since then.

But that's not the case. Almost none of this change has happened in the last few years, and the new LPIs should not be seen as simple extensions of the previous ones.

Instead, the entire trend line for the LPI has shifted as the project has gained access to data from more populations and species, and the types of populations included have changed. Since the last report, the number of populations in the LPI increased by around 1,000 (a 3% increase), and the number of species by about 300 (a 5% increase). An important change from the 2022 to the 2024 report was that both native and non-native species were included in the former, but since then, only native species have been included.

In this particular release, the number of populations and species from Africa increased substantially. The number of populations increased by 14%, and the number of species by 38%. Data coverage of this region, which had been under-represented in previous reports, has increased.

Chart 2 compares the LPI for 2022, 2024, and 2026 across different regions. Here, one can see

that whole lines have shifted, rather than things changing dramatically in just the last four years. Almost as many populations are increasing as decreasing.

Across the entire dataset, exactly 50% of populations were in decline, 43% were increasing, and the remaining 7% were stable.

Chart 3 shows the share of populations in the LPI that have trended in a given direction for different taxonomic groups. Around half of wildlife populations have declined in numbers. The rest were either increasing or stable. So, not all populations are struggling. This is not to dismiss the steep decline many populations are seeing. Instead, it's useful to know this so we can direct resources more efficiently to the areas and populations that need them most. It's more effective to target restorative and protective efforts to populations in serious trouble than to assume that all populations are struggling.

The index also varies from region to region. Latin America and the Caribbean have seen the most severe decline of any region. It experienced an average decline of 95% across its studied populations. In recent decades, it has experienced intense deforestation and expansion of agricultural land: the primary driver of habitat loss. It is also a biodiversity hotspot, being home to many endemic (unique) tropical species. These species are often highly specialised, and don't adapt well to changes in local conditions.

Africa is still rich in biodiversity. It's the only continent with a significant number of large mammals left. Unfortunately, it has dramatically declined in recent decades, with an average decline of 80% since 1970. Asia has also seen a decline of 49%. Europe has seen the smallest decline of all the continents, with an average of 23% since 1970.

Hannah Ritchie is Deputy Editor and Science Outreach Lead at Our World in Data

Is wildlife vanishing?

Data were sourced from the 2026 Living Planet Index (LPI) report by the Worldwide Wildlife Fund (WWF). This analysis was published by OurWorldInData, a non-profit website from the University of Oxford and the Global Change Data Lab

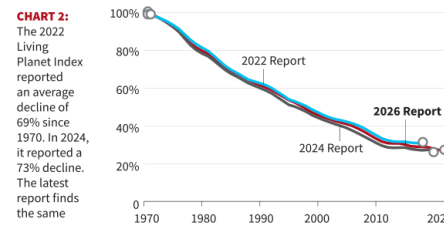
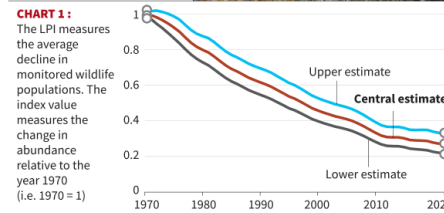
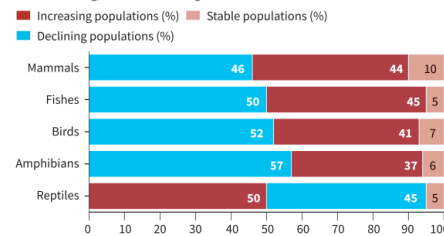


CHART 3: The share of globally studied populations in each taxonomic group with increasing, stable or declining numbers



महत्वपूर्ण तथ्य



- **Living Planet Report 2026** (जिसे WWF और ज़ूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ़ लंदन (ZSL) द्वारा 8 अक्टूबर 2026 को जारी किया गया है) पर्यावरण और जैव विविधता से जुड़ी एक बेहद महत्वपूर्ण रिपोर्ट है। इसे **"The Science of Hope"** (उम्मीद का विज्ञान) शीर्षक दिया गया है।
- इस रिपोर्ट और इसके **लिविंग प्लैनेट इंडेक्स (LPI)** के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. मुख्य निष्कर्ष (Key Findings of LPI 2026)

- **73% की भारी गिरावट:** रिपोर्ट के अनुसार, 1970 से 2022 के बीच दुनिया भर में निगरानी किए गए वन्यजीवों (कशेरुकी/Vertebrate species) की आबादी के औसत आकार में **73% की भारी गिरावट** दर्ज की गई है। (ध्यान दें: यह प्रतिशत प्रजातियों के विलुप्त होने का नहीं, बल्कि उनकी आबादी के औसत आकार यानी *Abundance* में आई कमी को दर्शाता है) [cite: 1.1.4]
- **पारिस्थितिकी तंत्र के अनुसार स्थिति:**
 - **मीठे पानी (Freshwater Ecosystems):** इसमें सबसे भयानक गिरावट देखी गई है, जो **85%** तक गिर चुकी है।
 - **स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (Terrestrial Ecosystems):** इसमें **69%** की गिरावट आई है।
 - **समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र (Marine Ecosystems):** इसमें **59%** की गिरावट दर्ज की गई है।
- **क्षेत्रवार गिरावट:**
 - **लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र** में सबसे ज्यादा **95%** की गिरावट आई।
 - इसके बाद **अफ्रीका** में **80%**, **एशिया-प्रशांत (Asia-Pacific)** में **49%**, **उत्तरी अमेरिका** में **28%**, और **यूरोप व मध्य एशिया** में **23%** की गिरावट दर्ज की गई है।

महत्वपूर्ण तथ्य



2. वन्यजीवों की आबादी में गिरावट के मुख्य कारण

- रिपोर्ट के अनुसार, प्रकृति के क्षरण के लिए निम्नलिखित कारक जिम्मेदार हैं:
- **निवास स्थान का नष्ट होना और विखंडन (Habitat Loss & Degradation):** मुख्य रूप से कृषि का विस्तार और वनों की कटाई।
- **संसाधनों का अत्यधिक दोहन (Overexploitation):** अत्यधिक शिकार और अवैध व्यापार।
- **जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण:** ग्लोबल वार्मिंग, प्लास्टिक प्रदूषण और आक्रामक प्रजातियां (Invasive species)।
- **भोजन और ऊर्जा प्रणालियाँ:** दुनिया में भोजन का उत्पादन और उपभोग करने का तरीका जैव विविधता के नुकसान का सबसे बड़ा कारण है।

3. भारत के संदर्भ में मुख्य बातें (India's Performance)

- वैश्विक स्तर पर गिरावट के बावजूद, रिपोर्ट में **भारत के संरक्षण प्रयासों (Conservation Successes)** की सराहना की गई है:
- **सकारात्मक रुझान:** भारत में कई प्रमुख वन्यजीवों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है।
 - **बाघ (Tigers):** भारत में बाघों की संख्या बढ़कर 3,682 तक पहुंच गई है और वैश्विक स्तर पर भी जंगली बाघों की संख्या बढ़ी है।
 - **अन्य प्रजातियां:** एशियाटिक शेरों (Asiatic Lions), एक-सींग वाले गैंडों (Greater One-horned Rhinos), हिम तेंदुओं (Snow Leopards) और गंगा नदी की डॉल्फिन की आबादी में भी सकारात्मक वृद्धि देखी गई है।
- **संरक्षण पहल:** भारत में नए रिजर्व (जैसे तमिलनाडु में देश का पहला ड्यूगोंग रिजर्व) और सामुदायिक स्तर पर किए जा रहे प्रयासों को वैश्विक स्तर पर सराहा गया है।

रिपोर्ट का सकारात्मक पक्ष (The Science of Hope)

- रिपोर्ट बताती है कि यदि सही नीतियां, राजनीतिक इच्छाशक्ति, मजबूत वित्तपोषण और स्थानीय समुदायों की भागीदारी हो, तो प्रकृति में सुधार संभव है।
- मॉनिटर की गई लगभग **50% वन्यजीव आबादी** या तो स्थिर हैं या बढ़ रही हैं (जैसे- ग्रीन ट्यूर्टल, ब्लूफिन टूना, और अफ्रीकी हाथी), जो यह साबित करती है कि लक्षित संरक्षण प्रयास सफल होते हैं।

Riyadh vows response after deadly airport hits

Saudi Arabia says the Houthi attacks have tested its resolve and that its retaliation would be decisive; Trump says he is considering joining the strikes; Houthis continue their missile attacks

Agence France-Presse
RIYADH

Saudi Arabia's Energy Minister on Monday said the country had been tested but would mount a "serious" response after a string of attacks on Riyadh's international airport by Yemen's Houthis that left 18 people dead.

"Energy security can't be taken for granted," Prince Abdulaziz bin Salman told an energy conference in Riyadh, as oil prices topped \$105 a barrel. "The events of recent weeks are serious, our response must be equally serious." He added, "For Saudi Arabia, these circumstances have tested our infrastructure, our institutions, our people, and our resilience."

On Saturday, Houthi strikes killed 13 people and wounded hundreds at King Khalid International Airport – the deadliest attack on Saudi soil in more than a decade. Four people died in earlier attacks on Wednesday and Thursday, and



An image from CCTV video shows passengers taking cover during Saturday's strikes at the Riyadh airport. SAUDI MEDIA MINISTRY VIA AP

another was killed on Sunday. Operations remained suspended at the sprawling airport on Riyadh's outskirts on Monday.

The atmosphere in Riyadh remained tense on Monday, as state broadcaster Al Ekhabariya said the military coalition was responding to drone and missile threats, and Australia's embassy warned its citizens in the city to shelter in a safe place.

The Houthis on Sunday claimed multiple attacks over the previous 24 hours, including on the airport, and threatened to

keep targeting Saudi transit hubs, calling them "a theatre of operations for our forces".

Hours later, the coalition said yet another projectile had struck Riyadh airport, sparking a fire, while air defences intercepted a missile nearby.

Riyadh's airport was not the only one to suffer a deadly attack: early on Monday, officials said one person had been killed and 11 wounded in a strike on Dammam airport. The Saudi-led coalition said on Monday that it had also "intercepted and des-

troysed" a Houthi heading for the southern city of Khamis Mushait, home to a major military base.

Despite vast spending on military hardware, the Houthi attacks on oil, military and transport facilities across the large, mostly desert country are stretching Saudi defences. The anti-Houthi coalition called Saturday's attack a "full-fledged war crime". The attack drew condemnation from the UN and leaders including U.S. President Donald Trump, who said he was considering joining Saudi strikes against the Houthis.

A Houthi official on Monday warned the U.S. it would receive a "painful response" if it entered the war in Yemen.

"If the U.S. becomes involved in the aggression against Yemen, we will not deliberate over the decision to respond, rather, there will be a swift and painful response targeting the US and all its interests in the region," Houthi political bureau member Mohammed Al Bukhaiti said.

Crisis deepens as Islamabad ousts PTI government in Khyber Pakhtunkhwa

The military-backed government in Pakistan has imposed emergency rule in the Opposition PTI-ruled Province, citing rise in terrorist attacks; the move comes amid a prolonged stand-off with the party of jailed ex-Prime Minister Imran Khan and a worsening security situation in the Province

NEWS ANALYSIS

Kallol Bhattacharjee

The Government of Pakistan on Sunday imposed emergency rule in Khyber Pakhtunkhwa, the restive northwestern Province where the PTI – Pakistan Tehreek-e-Insaf, the party founded by imprisoned former Prime Minister Imran Khan – has been in power. In a social media post, President Asif Ali Zardari said he had approved the summary recommendations of the Cabinet that had earlier met under the leadership of Prime Minister Shehbaz Sharif.

Mr. Zardari cited growing incidents of terrorism in the Province and dismissed the provincial government saying “terrorist attacks have increased to an unprecedented level of violent intensity...”.

With the announcement of the proclamation of emergency under Articles 232 and 234 of the Constitution of Pakistan, political power has passed on to the Province's Governor, drawing widespread protest and outrage on the streets.

The PTI, the ruling party in the Province, has been agitating for the release of its leader Mr. Khan for over three years. In re-

cent months, they had announced plans for a long march to Islamabad. The march that had been scheduled for September 27 was later postponed to October 4, as the government and the PTI continued to negotiate.

As talks foundered, the military-backed federal government attracted attention as a security blanket consisting of shipping containers and blast-proof barricades came up in vital locations of the capital conveying the message that the government would not allow the protest to reach Islamabad. The war of nerves between the PTI in Khyber Pakhtunkhwa and the Centre in Islamabad has been brewing since August 2023 when Mr. Khan was arrested.

While Chief Minister Sohail Afridi came to power in October 2025, the province has been dealing with multiple centres of power as Faisal Karim Kundi, the Governor, was chosen as the representative of the federal government.

But popular support remains firmly with the imprisoned former Prime Minister.

Opposition's response

Mahmood Khan Achakzai, Leader of the Opposition in the National Assembly (NA) of Pakistan, has an-



Rallying for release: Supporters of PTI take part in a march in Khyber Pakhtunkhwa, calling for the release of Imran Khan. AFP

nounced they will launch a peaceful protest against the decision of invoking emergency provisions of the Constitution while dismissing a democratically elected government in Khyber Pakhtunkhwa.

Separately, the PTI is holding protests in different parts of the country and hundreds of leaders, including Mr. Khan's three sisters, have courted arrest. In addition, according to reports, some of the tribal chiefs have called for armed resistance against the military-backed government.

Since coming to power in October 2025, Mr. Afridi has made the release of Mr. Khan as the main agenda of his government and shortly before the imposition of emergency, he had reiterated that the only way to diffuse the situation was to release Mr. Khan

cies” that have helped in the flourishing of terrorism in the province.

The PTI had gone to the Supreme Court seeking intervention to help Mr. Khan. The top court permitted the former Prime Minister to receive better treatment at the Shifa International Hospital of Islamabad and allowed his family members to meet him. However, the government did not follow the instructions. Instead, he was taken to the state-run PIMS (Pakistan Institute of Medical Sciences) during the night of August 20-21, where he was declared medically fit.

The Taliban trouble

The military-backed federal government has been alleging the Taliban is sending the Tehreek e Taliban Pakistan (TTP) fighters for attacks inside Pakistan using the Province as a staging ground for attacks in different parts of Pakistan.

On the other hand, critics of the government have been alleging that Pakistan has been training the officials of the pre-Taliban Afghan security establishment for launching attacks against the Taliban.

Khalilullah Safi, an expert on Islamic State-Khorasan Province (ISKAP), pointed out to *The Hindu* there is considerable ground to

suspect the military establishment in Pakistan is extending support to the ISKP. “What’s happening in KP [Khyber Pakhtunkhwa] is linked to the overall plans that Pakistan military has for Afghanistan, Iran and even Central Asia,” said Mr. Safi.

The Taliban in Afghanistan holds the dominant position, and as a result, the ISKP has been pushed out. The situation inside Khyber Pakhtunkhwa is amplified by the frequent border clashes between the Taliban and the Pakistani military. Atif Mashal, Afghanistan's former ambassador to Pakistan, said the Pakistani military is acting according to its regional agenda by getting the government to impose emergency in Khyber Pakhtunkhwa.

“The declaration of emergency, in my view, has not occurred solely due to the protests of the PTI. It appears the protests serve as a superficial pretext. But behind it lies another regional agenda of Pakistan's military leadership, one that deems the militarisation of these areas essential for its implementation,” Mr. Mashal said on X. In a warning to the military establishment, he further said, “the era of managed instability seems to be drawing to a close”.



American economists win Nobel for linking household trends to policies

T.C.A. Sharad Raghavan
NEW DELHI

American economists Robert E. Hall and Michael Woodford were on Monday announced recipients of the 2026 economics Nobel for providing an empirical formula to help government frame policies that are aimed at stabilising the economy while incorporating household demand behaviour and supply behaviour of companies.

Professor Hall, 83, is currently the Robert and Carole McNeil Joint Hoover Senior Fellow and Professor of Economics at Stanford University while Mr. Woodford, 71, is the John Bates Clark Professor of Political Economy at Columbia University.

The official citation of the economics Nobel, formally the Sveriges Riksbank Prize in Economic Sciences in Memory of Alfred Nobel, said the duo was awarded for establishing the “microeconomic foundations of macroeco-

Beyond the big picture

American economists honoured for developing macroeconomic models that derive insights from microeconomic trends



Robert E. Hall
Stanford University, U.S.

Brought empirical backing to the importance of households' expectations of future path of disposable income



Michael Woodford
Columbia University, U.S.

Set up a composite framework to understand business cycles and their impact on government policies

omic stabilisation”.

“This year’s laureates in the economic sciences have developed new macroeconomic models that have significantly improved our ability to implement effective stabilisation policy,” the Royal Swedish Academy of Sciences said.

About their work

In a paper published in 1978, Professor Hall brought empirical backing to the idea that, while a household’s current disposable income does impact its current spending, its expectations about the future path of disposable income matters almost just

as much.

Professor Woodford, on the other hand, focused on supply, particularly on firms and how they set prices, and combined both his work and Professor Hall’s into a composite framework. This combination helped with understanding business cycles, what causes them, how they play out, and the impact of these on government policy.

“On the basis of these models, well-timed fiscal and monetary policy measures can reduce the economy’s peaks and troughs,” the statement by the Royal Swedish Acade-

my said. The research done by Professor Hall and Professor Woodford also provides an empirical basis, as Professor Woodford himself explained on Monday, for the idea that the effectiveness of economic policy is also determined by how well the government communicates the need for implementing those policies.

A matter of perspective

“One of the themes in my work is that government authorities shouldn’t view stabilisation of the economy as an exercise that is simply conducted by people pulling levers to control the economy independently of what people in the economy understand about this,” Professor Woodford said on Monday during the press conference announcing the Nobel results.

He explained that his work has stressed the need for consumers to understand the future course of policy, which is “crucial” to the effects of policy.

Arlekar now full-time T.N. Governor; Sudha Yadav to take charge in Karnataka

The Hindu Bureau
NEW DELHI

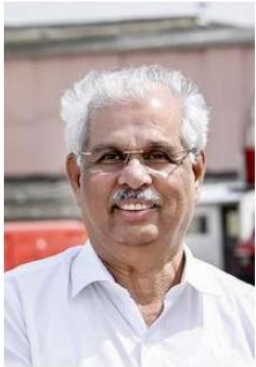
President Droupadi Murmu on Monday effected changes in Governors across six States.

Rajendra Vishwanath Arlekar will now serve as the full-time Governor of Tamil Nadu. Mr. Arlekar, who was sworn in as Kerala Governor on January 2 last year, had been holding the additional charge of Tamil Nadu since March 12.

Sikkim Governor Om Prakash Mathur will be the new Governor of Kerala in place of Mr. Arlekar, a communique issued by the Rashtrapati Bhavan said.

Sudha Yadav has been appointed Governor of Karnataka, while Braj Mohan Ram will take charge in Odisha, Dhal Singh Bisn in Uttarakhand, and former BJP general secretary Dushyant Gautam in Sikkim.

Ms. Yadav, who replaces Thaawar Chand Gehlot, served as an MP from Ma-



Rajendra Vishwanath Arlekar and Sudha Yadav

hendragarh in Haryana between 1999 and 2004. She was also a member of the BJP's Parliamentary Board, the party's highest decision-making body from August 2022 till the new team of national president Nitin Nabin took charge.

Former MP

Mr. Braj Mohan was a Lok Sabha member between 1996 and 2004 from Palamau in Jharkhand. Mr. Bisn, who takes over the

post in Uttarakhand, is a former MP from Madhya Pradesh and has served as a Minister in the State government.

He replaces Lt. General Gurmeet Singh (retd), whose five-year tenure, one of the longest in the State, came to an end in September.

Mr. Gautam, who has been appointed Sikkim Governor, is a former Rajya Sabha member and has also served as BJP general secretary.

महत्वपूर्ण तथ्य



सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय



मैसूर में 11 अक्टूबर से 9 दिवसीय शिल्प समागम मेला 2026

मेले में 12 राज्यों के कारीगरों के पारंपरिक हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई

प्रविष्टि तिथि: 12 OCT 2026 7:40PM by PIB Delhi

कर्नाटक के मैसूर स्थित मैसूर दशहरा एग्जिबिशन ग्राउंड में 'शिल्प समागम मेला 2026' चल रहा है। इसे भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा 11 अक्टूबर से आयोजित किया जा रहा है।

19 अक्टूबर तक चलने वाले 9 दिवसीय मेले का उद्देश्य अनुसूचित जातियों, अन्य पिछड़ा वर्ग और सफाई कर्मचारियों के बनाए उत्पादों के लिए विपणन का मंच प्रदान करना है। इसमें मंत्रालय के अधीन काम करने वाले तीन राष्ट्रीय निगमों यानी राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम (एनएसएफडीसी), राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम (एनबीसीएफडीसी) और राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी वित्त और विकास निगम (एनएसकेएफडीसी) से मदद पाने वाले कारीगर भी शामिल हैं।

मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य कारीगरों के लिए बाजार तक पहुंच को बेहतर बनाना, पारंपरिक शिल्प कौशल का संवर्द्धन करना और लक्षित समूहों के लिए स्थायी रोजगार के अवसर पैदा करना है।

Home Assignment



- ☐ International Women's Day
- ☐ Gaganyaan
- ☐ CERVAVAC

Overview

- **PM-Gati Shakti**
- **Light House**
- **SIR**
- **CPI**
- **Keralam – Old age People Bill**
- **Lakshdweep – Ullas**
- **Price Hike Drugs**
- **IPCC Summit**
- **Living Planet Index**
- **SA – Houthis**
- **Pakistan Emergency**
- **Nobel Prize – Economics**
- **New Governor Appointment**
- **Shilp Samagam Mela**

Thank You
Result Mitra

Thanks For Watching

Follow us for more Updates



@RRESULTMITRAOFFICIAL



Join our Telegram



@SUNILVERMA_THEIASMENTOR



Follow on Instagram



Subscribe Now

Stay Connected

Learn
Share
Grow
Together ♥

Better
Students
Brighter
Tomorrow

DISCIPLINE
CONSISTENCY
SUCCESS

Small
Steps
Big
Results
😊